SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में भारतीय मुस्लिम समाज

श्वेता शर्मा, शोधार्थी, हिंदी विभाग
संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय, अम्बिकापुर, जिला–सरगुजा, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
श्वेता शर्मा, शोधार्थी
E-mail : mshweta146@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 15/09/2025
Revised on : 15/11/2025
Accepted on : 25/11/2025
Overall Similarity : 00% on 17/11/2025

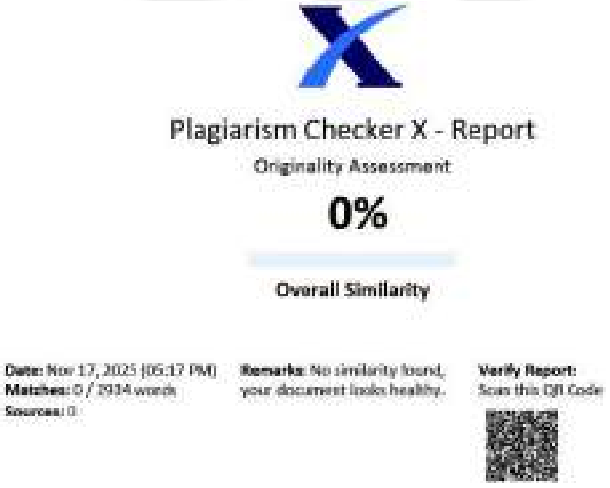

शोध सार

मुस्लिम समाज की अपनी निजी चिंतन धारा है क्योंकि उनका अपना एक निजी मज़हब है। अपने निजी उसूल, संस्कृति, जुबान, वेश–भूषा और खानपान और मुस्लिम दवा दारू है, अपने गृह उद्योग हैं अपनी उत्पाद और वितरण व्यवस्था भी है। अपना इतिहास वास्तुकला, स्थापत्यकला, नृत्य, संगीत है। इन सबों के मिले–जुले रूप को ही मुस्लिम विमर्श कहा जाता है। हर धर्म की तरह मुस्लिम धर्म में भी पुरातनपंथी और प्रगतिवादी विचार धारा के लोगों में हमेशा वाद–विवाद होते रहे हैं। इस्लाम मनुष्य की अहमियत को महत्व देता है और मनुष्य को जीवन के सही अर्थ ढूँढ़ने की आज़ादी देता है। इस तरह सही अर्थ ढूँढ़ने वालों को अप्रत्याशित रूप से मिलने वाले आश्चर्यजनक दृष्टिकोणों को इस्लाम अपनाते हुए आगे बढ़ता है। इस्लाम धर्म में जन्मे लोग अपने लोगों के बारें में लिखते रहे हैं, दूसरों के बारे में भी लिखते रहे हैं। गैर–इस्लामी लेखकों ने भी मुसलमानों के बारे में खूब लिखा है। प्रेमचन्द, यशपाल, अश्क, भीष्म साहनी और कमलेश्वर के समय में भी गैर मुस्लिम लेखकों के साहित्य में मुस्लिम पात्र भरे रहते थे, जैसे भारतीय समाज में होता है। लेकिन आज कल मुस्लिम पात्र विरले हो रहे हैं। गैर मुस्लिम लेखकों के लेखन में मुस्लिम रचनाकारों से लिखे साहित्य और गैर–मुसलमानों के साहित्य में अभिव्यक्त मुस्लिम समाज का अध्ययन तथा भारतीय समाज का अध्ययन करने की जरूरत महसूस होती है, क्योंकि "इतिहास गवाह है कि देश पर अनेक धर्म एवं सम्प्रदाय के लोगों का शासन रहा। इस प्रकार यहाँ भिन्न–भिन्न धर्म एवं सम्प्रदाय के लोग आए, उनकी संस्कृति और रीति–रिवाज आए।

मुख्य शब्द

भारतीय मुस्लिम समाज, मुस्लिम स्त्री, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियाँ, शिक्षा, तलाक, बहु–विवाह.

प्रस्तावना

देश के लोगों ने अपनी इच्छानुसार उन्हें रचाया–बसाया, अपनाया और वे लोग स्वयं भी यहाँ की जरूरतों के अनुसार अपने को समायोजित किए। कोई भी धर्म, मज़हब या सम्प्रदाय अपने मूल रूप में नहीं रहा। सबने यहाँ की मिट्टी और आबो–हवा के अनुसार अपने में परिवर्तन लाया। वैसे देखा जाए तो संस्कृतियों की शुद्धता की बात बेईमानी है। ठीक उसी तरह हिन्दू, मुस्लिम, पारसी, बौद्ध, जैन और इसाई संस्कृति की बात निराधार है क्योंकि सभ्यता एवं संस्कृति कभी धर्म के साथ बंधी नहीं होती। मूलतः वह किसी राष्ट्र की धरोधर होती है जो इतिहास के उतार–चढ़ाव में जन्म लेती है, पलती और बढ़ती है। वह किसी धर्म, जाति एवं संप्रदाय आदि की नहीं होती है। अगर ऐसा होता तो इस देश में अरब, तुर्क, मुगल, अंग्रेज आदि अनेक जातियाँ, संप्रदाय, धर्म के मानने वाले आए और यहाँ की मिट्टी में रच बस गए। सच तो यह है कि इतिहास के उतार–चढ़ाव में धर्म अपने मूल रूप में नहीं रहा, चाहे हिन्दू धर्म की बात करें या इस्लाम, बौद्ध, जैन की बात करें या फिर इसाई की। इतिहास के उतार–चढ़ाव में उनका रूप बदला है। स्वातंत्रता के बाद कई हिन्दू और मुस्लिम लेखकों ने उस दौर से लेकर आज तक के मुस्लिम समाज के बारें में जो देखा और सोचा उसे अपनी कहानी का विषय बनाया। इस विषय को निम्न उदाहरणों से समझने की कोशिश करते हैं।

यशपाल की कहानियों में मुस्लिम समाज की समस्याओं को छूने वाली कहानियों में परदा, खुदा और खुदा की लड़ाई, दूसरी नाक, मंगला और जाब्ते की कारवाई प्रमुख हैं। बदलती हुई परिस्थितियों ने मुस्लिम जीवन को बहुत प्रभावित किया है। मुसलमानों के सामन्तीय वर्ग से अंग्रेजी राज के मध्यवर्ग बनने और उससे टूटकर निम्न मध्यवर्ग और निम्नवर्ग से परिवर्तित होने ऐतिहासिक दस्तावेज है कहानी–'परदा'।

'परदा' मुस्लिम परिवेश को उद्घटित करने वाली कहानी है। परदा कहानी में यशपाल ने पीरबक्श के माध्यम से झूठी प्रतिष्ठा का पर्दाफाश किया है। इस कहानी में परदा झूठी शान, मान–मर्यादा का प्रतीक है। बदलती सामाजिक परिस्थितियों में सामन्ती प्रवृत्तियों के मुस्लिम जन की टूटन–विखरन और निम्न होती चली जाने वाली आर्थिक स्थिति और सामाजिक हैसियत की रक्षा के प्रयासों के करूण आख्यान हैं यह कहानी। मुस्लिम समाज की पीड़ित मनः स्थिति का हूबहू वर्णन यशपाल की कहानियों में हुआ है। इनकी कहानियों में मुस्लिमों की त्रासदी पूर्ण आर्थिक स्थिति, मानसिकता, विभाजन की त्रासदी इत्यादि स्थितियों का विभिन्न कोणों से विश्लेषण हुआ है। पीरबक्श ने पठान के पैसे नहीं दिये तो वह उसके घर आकर गालियाँ देने लगा। आस–पास के लोग जमा हो गये। वह क्रोधित स्वर में कहने लगा "पैसा नहीं देना था तो लिया क्यों? तनखाह किदर में जाता? हरामी हमारा पैसा मारेगा।. ....अम तुम्हारा खाल खींच लेगा।.....पैसा नई है तो गर पर परदा लटका के शरीफज़ादा कैसे बनता?"[1]

मस्जिद, त्यौहारों में रूचि और उत्साह, रमजान, कुरान के प्रति श्रद्धा, खैरात और जकात, जुम्मा और नमाज, धार्मिक कट्रता और उदारता, साम्प्रदायिक कलह, घृणा और अविश्वास, साम्प्रदायिक तनाव, दंगे और भय, उन्माद और साहस धार्मिक और सामाजिक अन्धविश्वास आदि पर विचार करते हुए प्रत्येक का उदाहरण हिन्दी कहानियों में मुस्लिम जीवन के सन्दर्भ में देखने का मिला है। भारत जिसमें भिन्न–भिन्न जातियों, धर्मो और संस्कृतियों का संगम है फिर भी हिन्दू धर्म और संस्कृति इस देश की प्रमुख संस्कृति है। अन्य जातियों और संस्कृतियों का महत्व भी कुछ कम नहीं है। देखा जाए तो मुस्लिम समाज में हमें भिश्ती, धोबी, तेली, मुर्गीपालक, रंगरेज, कसाई भिक्षुक, दर्जी, मिस्त्री आदि कारीगर पेशवर लोग मिल जायेंगे। हिन्दी कहानियों में हमें जैसे उपेन्द्रनाथ अश्क की कहानी भिश्ती की बीवी, शीर्षक कहानी में अश्क ने भिश्ती के जीवन का एक खाका पेश किया है। भिश्ती नानकदीन बेहद गरीब है। वह मेहनत–मजदूरी करके किसी तरह अपना और अपने परिवार का पेट पालता है। मंजूर एहतेशाम की कहानी 'बशीर खाँ मॉर्डन केनिंग आर्ट' शीर्षक कहानी कारीगरी पर आधारित है। तो दर्जी पर मोहन राकेश की कहानी 'मलबे का मालिक' में इस कारीगरी के पात्र का देखा जा सकता है।[2]

अमृतलाल नागर ने मुस्लिम पात्रों को लेकर मुस्लिम समाज पर अनेक कहानियाँ लिखी जिसमें प्रमुख रूप से 'मोती की सात चलनियां', 'शकीला की मां', 'कादिर मियाँ की भौजी', 'एक दिल हजार दास्तां' इनकी प्रमुख कहानियाँ हैं जिसमें मुस्लिम समाज का चित्रण देखने को मिलता है। जहां मोती की सात चलनियां कहानी उन विश्वासों का मजाक उड़ाती हैं, जो समाज में यह प्रचार करती है कि लखनऊ में वाजिद अली शाह ने हिन्दु–मुसलमानों की एकता की एक परम्परा कायम की थी। अमृतलाल नागर की कहानी 'कादिर मियाँ की भौजी', में मुख्य चरित्र भौजी उर्फ नवाबिन हिन्दी कहानी के अविस्मरणीय चरित्रों में से एक है। इस कहानी में लखनऊ के उस पतनशील समाज का चित्रण है, जो नवाबों की विलासप्रियता में विकसित हुआ । नवाब मियाँ हो या कादिर मियाँ दो पैसे पाकर अयाशी में उडा देते । नवाबिन ही सब्जी बेचकर पेट पालती है, सिर्फ पेट ही नहीं नवाब मियाँ की लतों और शौकों को भी पालती है।

'नवाब मियाँ ने टीन के बक्स से नई लुंगी निकाली, गंजी बदली, कुरता कंधे पर डाला, तुर्की टोपी सिर पर रखी और कहा– "अच्छा अब अपने नखरे खत्म कर। एक आठ आने पैसे तो दे जल्दी से देना तो, बेगम साहब।"[3] मेराज अहमद की कहानियाँ समस्याओं और समाज की जटिलताओं को रेखांकित करने का प्रयत्न करती हैं और सभी समस्याओं, जटिलताओं का निराकरण करने का प्रयत्न कथाकार अपने पात्रों के माध्यम से कराने का प्रयत्न करता है। 'दावत' कहानी संग्रह में अनेक कहानियां हैं जिनमें प्रत्येक कहानी किसी ना किसी अनछुए मुद्दे पर पाठक का ध्यान आकर्षित करती है और उसको सोचने पर मजबूर भी करती है। इस कहानी संग्रह की 'जिन्नात' कहानी मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार की कथा है जिसमें एक मुस्लिम लड़की एक हिन्दू कुर्मी लड़का विनोद से प्रेम करने लगती है। जिसकी खबर घर वालों का होती है तो उसका विवाह एक बुजुर्ग व्यक्ति मौलवी से कर देते हैं जिसके कारण मुस्लिम लड़की अतिया खुश नहीं रहती जिस कारण वह चुपचाप रहती और किसी से बात भी न करती तो गांव वाले समझे इस पर जिन्नात का असर आया है और उसको मौलानाओं, ओझाओं सभी को दिखाते हैं फिर भी दिनोदिन कमजोर ही होती जाती है। बाबा, ओझा, मौलाना और मन्तिको के नाटक से अतिया की हालत लगातार गिरती रही क्योंकि उसका खाना–पीना भी रूक गया था। वह लगातार विनोद के प्रेम में कुढ़ती रही और अंत में वह मर जाती है।[4] इस कहानी के माध्यम से लेखक ने मुस्लिम समाज में फैली रूढ़ीवादिता, परम्पराओं, धार्मिक कुण्ठाओं तथा सामाजिक समस्याओं को अपनी कहानियों के माध्यम से उठाने का प्रयास किया है।

अज्ञेय की एक कहानी 'मुस्लिम–मुस्लिम भाई–भाई' जो 1947 में विभाजन के समय मनुष्य की मानसिकता के पक्ष को दिखाती है। इस कहानी में फैली दहशत से घबराकर तीन अधेड़ स्त्रियाँ आमिना, जमीला और सकीना पाकिस्तान जाने का निश्चय करती हैं जिस पर रेल में चढ़ने की कोशिश में उच्च वर्ग द्वारा उन्हें डिब्बे से बाहर कर दिया जाता है। अज्ञेय ने इस कहानी के माध्यम से वर्ग चेतना, धर्म और मजहब से नहीं, अपने वर्ग हितों से अनुशासित होता है। इस्लाम में सब बराबर हैं लेकिन स्पेशल रेल के सेकेण्ड क्लास में अपने अफसरी दर्प से अमजद भाई और अपनी उच्च स्थिति को लेकर गार्वित उनके साथ ही औरतें जैसी सामान्य और साधनहीन औरतों को किसी कीमत पर बराबरी का दर्जा देने को तैयार नहीं।[5]

नासिरा शर्मा की कहानियों में उच्च मध्यवर्गीय मुस्लिम संस्कृति का परिचय मिलता है। खास कर मुस्लिम समाज में स्त्री के प्रति प्रचलित व्यवहार और धार्मिक कट्टरता को अपने कटाक्ष से चित्रित किया है। उनकी कहानियों में 'कैदघर' जो मुस्लिम महिला के अकेलेपन की समस्या को दिखाती है तो 'मरियम' कहानी एक अविवाहित महिला को समाज में किन समस्याओं को सामना करना पड़ता है इस पर लिखी कहानी है। वही उनकी 'नमकदान' मुस्लिम समाज में औरत की दशा समय–समय के साथ बदलती रही है। हिन्दी कहानियों में मुस्लिम औरतो के चरित्र, रहन–सहन, शिक्षा, उनके आधिकारों का प्रयोग वे कितना करती हैं अत्यन्त सूक्ष्म ढंग से प्रस्तुत किया है।

नासिरा शर्मा की कहानी 'दूसरा कबूतर' के माध्यम से उन्होंने मुस्लिम समाज में बहु–विवाह की प्रथा को दर्शाया है जिसमें एक पत्नी के होते हुए भी पति दूसरा विवाह करता है, तथा दोनों पत्नियों को इस बात से बेखबर रखता है अंत में दोनों पत्नियाँ उससे तलाक ले लेती हैं। लेखिका प्रश्न उठाती है कि मुस्लिम समाज में पुरुष को

तो चार शदियां करने का अधिकार मिला हुआ है परन्तु स्त्रियों को आज भी यह अधिकार नहीं मिला हुआ है। इसके अतिरिक्त अनवर सहैुल की कहनी 'नसीबन' में भी तलाक जैसी समस्याओं का चित्रण किया है।[6]

हुस्न तबस्सुम निहाँ ने अपनी कहानी 'नीले पंखों वाली लड़कियों में रजिया चरित्र के माध्यम से लड़कियों की आजादी को दर्शाया है। आज की वर्तमान युवा पीढ़ी के विचारों को सामने रखते हुए आज दूसरे के विचारों के थौंपना, धर्म, जाति के बंधन से मुक्ति, रीति–रिवाज, परंपराओं को तौड़ना, उन पर प्रश्न–चिन्ह उठाना जैसी आज की समस्याओं को सामने रखा है कि किसी प्रकार आज का मध्यमवर्गीय परिवार आज की युवा पीढ़ी की इस समझ को हर दूसरे घर में देखा जा सकता है। रजिया के माध्यम से लेखक कहता है "रजिया का मानना है कि घरवालों की जोर जबरदस्ती से शादी करना ठीक नहीं हम जिस व्यक्ति से प्रेम करते हैं शादी भी उसी से करनी चाहिए। मगर ये क्यूं....? ये कैसी कैद....ये कैसी बंदिशें....कैसी रिवायते...किस धर्म ने कहा कि विवाह अपने ही धर्म या अपनी ही जाति में करो...किस किताब में लिखा है कि अंसारी में ही जाए या मुसलमान मुसलमान में ही...?

मंजूर एहतेशाम की कहानियाँ मध्यमवर्गीय मनुष्य के अंतर्जगत पर पड़ने वाले संशिलष्ट प्रभावों को उनकी समस्त जटिलता के साथ उद्घाटित करती हैं। बदलते सामाजिक संबंधों के समीकरणों में भारतीय मुस्लिम समाज की सोच चिंताएँ, उम्मीदों और नाउम्मीदों को इनकी कहानियों में सूक्ष्मता से देखा जा सकता है। इस तरह की कहानियों में 'रिहाई', 'कौम' और तसबीह हैं जिसमें 'तसबीह' कहानी एक पारम्पारिक मजह्वी परिवार और अपने धर्म या मजहब को ठेंगें पर रखने वाले सदस्यों के आपसी मतभेद और अंतरद्वंद्व की कहानी है। इस कहानी में अम्मा और साजिदा दोनों ही निहायत धर्म भीरू औरतें हैं। रोज–नमाज की पाबंद, हज–जकात आदि में विश्वास रखने वाली। इस कहानी में मंजूर एहतेशाम स्पष्ट करते हैं कि सामाजिक–धार्मिक रूढ़ियों को विचारों के स्तर पर ध्वस्त करना तो आसान है, पर संवेदनात्मक अवरोधों को पार करना इतना सरल नहीं हुआ करता है। मुस्लिम शरीअत के मुताबिक समाज में गर्भ–गिरवाना एक कत्ल के ही बराबर माना गया है। उसे किसी भी हालत में माफ नहीं किया जा सकता है। मुस्लिम समाज में पुरूष–वर्ग का इतना दबदबा बना हुआ है कि आम औरत को अपने होने वाले बच्चे को रखने या न रखने का अधिकार भी उससे छीन लिया जाता है। इस सामाजिक अन्याय को इस कहानी में दिखाया गया है।[8]

मेहरूनिन्सा परवेज ने अपनी कहानियों में मुस्लिम समाज की रोजमर्रा की जिन्दगी, पीड़ा और दैन्य जीवन के अनुभवों के यथार्थ को सामने रखा है। मुस्लिम जीवन के विश्वास, रीति–रिवाज, संस्कृति और आशाएं–आकांक्षाएं उनकी कहानियों में प्रमाणित रूप में वार्णित होती हैं। उनकी कहानियों का परिवेश मुख्यतः मुस्लिम समाज का मध्य और निम्न मध्यवर्ग ही रहा है। उनकी कहानियों में प्रमुख 'कयामत आ गई' कहानी मुस्लिम परिवेश और उसकी सामाजिक विडम्बनाओं को व्याख्यायित करने वाली एक श्रेष्ठ कहानी है। इसमें पर्दा–दर–पर्दा जिन्दगी की घुटन और ब्याह शादी के पुराने पड़ चुके रिवाजों और मुस्लिम परिवारों में लड़कियों के पाँव भारी होने की इसी कयामत के आगमन की चेतावनी है। कथावक्त्री नजमा अपनी भतीजी रन्नों के निकाह में बहुत समय बाद अपनी आपा राबिया के घर जाती है। राबिया को एहसान भाई से प्यार था, मगर रूढ़िवादी मुस्लिम समाज में वे उसे व्यक्त नहीं कर सकती थीं। राबिया गर्भवती हो जाती है एक ऐसे समाज में जहाँ कुँवारी माँ होना ही कयामत भर थी।''सब कयामत का आसार है, शक्कर मीठी नहीं रहेगी, लोग नाच–गानों में मस्त रहेंगे, पक्के मकान होंगे, कुँवारी लड़कियाँ पेट भरेंगी, नमक महँगा होगा, सब कयामत के आसार हैं।''[9] उनकी और भी कहानियों जैसे अपने–अपने लोग, त्यौहार, सीढियों का ठेका, भोगे हुए दिन, आदम और हव्वा, ढहती कुतुबमीनार में मुस्लिम समाज का चित्रण देखने को मिलता है।

मो. आरिफ की 'मौसम' कहानी में लेखक ने मध्यवर्गीय मुस्लिम समाज के दृश्य को दिखाया है। इस कहानी में एक पारंपरिक माहौल दिखाया है खास कर मध्यमवर्गीय परिवार में समाज को लेकर जो नजरिया जिसमें झूठी शान एवं स्वाभिमान होता है वह इस परिवार में भी दिखायी देता है। इस कहानी में मध्यमवर्गीय परिवार में बच्चा पढ़–लिख कर नौकरी न करे तो किस–किस प्रकार के ताने उसे परिवार और समाज देता है उसका चित्रण किया गया है साथ ही चुनावों के समय जो मध्यमवर्गीय समाज से वादें नौकरी और महंगाई के किये जाते हैं उनका जिक्र

भी इस कहानी में किया गया है।[10]

भीष्म साहनी हिन्दी के उन कहानीकारों में से हैं, जिन्होंने विभाजन की त्रासदी को आंखो देखा, कानो सुना और साक्षात् भोगा भी था। उनका कहानी संग्रह 'पाली' में कहानी 'पाली', 'झुटपुटा', और 'आवाजें' कहीं न कहीं इन कहानियों में विस्थापितों का दर्द, दंगों की वहशीयाना हरकतों को खोल कर रख देती है। धर्म के नाम पर लोगों के बीच वैमन्सय और पूँजीवादी आधुनिकता बोध मनुष्य के जीवन को किस तरह विसंगतियों के जाल में उलझा देता, जिससे मुनाफाखोरी संस्कृति का विकास होता है, इस पर यह कहानी आधारित है। कहानी 'झुटपुटा' के द्वारा मुस्लिम समाज का वर्णन मिलता है। इस कहानी में साम्प्र दायिकता के भयावह चित्र को दर्शाया गया है। इस कहानी में दंगा को लेकर समाज के दृश्य को दिखाया है। साथ रहते–रहते कम से कम मुहल्ले के लोगों में आत्मीयता आ जाती है। इस कहानी के पात्र रिजवी और शंकरदत्त भले ही दो सम्प्रदाय के हो पर दोनों में आत्मीयतापूर्ण संबंध हैं।

मुस्लिम कहानीकार अब्दुल बिस्मिल्लाह ने मुस्लिम समाज को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने के साथ–साथ मुस्लिम समाज की विविध समस्याओं पर भी प्रकाश डाला है। उन्होंने समाज की रूढी परंपरा, शिक्षा, नारी धर्म आदि बुराई का पर्दाफाश किया तो धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक समस्याओं पर भी प्रकाश डाला। उनकी कहानी 'लफंगा', 'शीरमात्र का टुकडा' में नसीबन, 'जीना तो पड़ेगा', 'फिर क्या' हुआ', 'भूत' आदि कहानियों के माध्यम से उन्होंने मुस्लिम संस्कृति और रीति–रिवाजों का जिक्र किया है।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में भी ऐसे किरदार समाज में मौजूद हैं जो मुस्लिम भारतीय मुस्लिम समाज में जरूरत होकर सामाजिक सरोकार से कोसों दूर तमाशबीन बनकर बैठे हैं, जो हकीकत से काफी दूर हैं और जो अपने ही चारदीवारी में कैद हैं कभी उससे बाहर आकर आसमान की ओर देखना भी उन्हें गवारा नहीं होता, मुस्लिम समाज की यह त्रासदी आज इतने वर्षों बाद भी गांव देहातों में बदस्तूर देखने को मिलती है। हिन्दी कहानियों में मुस्लिम जाति के निम्न, मध्य और उच्च लगभग सभी वर्गो के लोगों की समस्याओं और स्थितियों को दिखाया गया है। इन कहानियों के लेखक हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही समाज के रहे हैं और उन्होंने धार्मिक भेदभाव से ऊपर उठकर मुस्लिम जीवन पद्धति का वर्णन किया है। इन कहानियों में एक ओर मुस्लिमों की आर्थिक और सामाजिक समस्या्ओं और दुर्दशाओं के चित्र देखने को मिलते हैं, तो दूसरी ओर इनमें व्यवसायगत और जातिगत समस्याओं और बाधाओं को दिखाया गया है। मुस्लिम समाज में नैतिक मूल्यों के निर्माण में परिवर्तन आता हुआ दिखाई दे रहा है। इस आधुनिक परिवर्तन को स्वीकार करते हुए मानवीय दृष्टिकोण को ही प्रमुख रूप से प्रधानता दी जा रही है। वस्तुतः युग के अनुकूल आदर्श बदल रहे हैं तथा नये समाज से तारतम्य स्थाापित करने के लिए नई युग दृष्टि पैदा हो रही है।

संदर्भ सूची

1. यशपाल (2004) *प्रतिनिधि कहानियाँ, परदा,* जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, पृ. 73।
2. रानी, दीपिका (2009) *हिन्दी कहानी और मुस्लिम समाज,* संजय प्रकाशन, दरियागंज, नईदिल्ली, पृ. 33।
3. रानी, दीपिका (2009) *हिन्दी कहानी और मुस्लिम समाज,* संजय प्रकाशन, दरियागंज, नईदिल्ली, पृ. 73।
4. अहमद, मेराज (2016) *दावत कहानी संग्रह,* वाड्मय बुक्स प्रकाशन, अलीगढ, पृ. 116।
5. अज्ञेय (2013) *मेरी कहानियाँ– कहानी 'मुस्लिम मुस्लिम भाई–भाई,* भारतीय साहित्य संग्रह, कानपुर, जनवरी 2013।
6. शर्मा, नासिरा (2018) *कहानी संग्रह– खुदा की वापसी, कहानी सूरा कबूतर,* वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली।

7. निहां, हुस्न तबस्सुम (2025) *कहानी संग्रह–नीले पंखों वाली लड़कियाँ,* स्वराज प्रकाशन, दरियागंज, नईदिल्ली, पृ.. 22।

8. रानी, दीपिका (2009) *हिन्दी कहानी और मुस्लिम समाज,* संजय प्रकाशन, नईदिल्ली, पृ. 79।

9. मेहरून्निसा परवेज, विजयदेव झारी(सं०),नफीस आफरीदी (2011) *मुस्लिम परिवेश की विशिष्ट कहानियाँ, कहानी द कयामत आ गई,* पराग प्रकाशन, शाहदरा, नईदिल्ली, पृ. 65।

10. आरिफ, मो. (फरवरी 2005) *मौसम,* तदभव–अंक 12, संपादक– अखिलेश– फरवरी 2005, पृ. 80।

****